Date ___/___/______ Page No.: 1

Date:- 19/04/2020
Content Writer:-
Dr. Akhay Kumar Pathak
Deptt. of Economics,
Marwari College,
Darbhanga (LNMU)

Degree Part-I (Hons.)
Paper-I
Content of the Paper:-
Micro Economics
Module-4

TOPIC:- ANALYSIS OF MONOPOLISTIC COMPETITION
(एकाधिकृत प्रतियोगिता का विश्लेषण)

Scanned with CamScanner

एकाधिकृत प्रतियोगिता से आशय बाजार की उस अवस्था से है जिसमें विक्रेता वस्तुओं में इतना विभेद पाया जाता है कि वे एक-दूसरे की पूर्ण स्थानापन्न नहीं होतीं। प्रत्येक उत्पादक या विक्रेता का अपनी वस्तु पर पूर्ण एकाधिकार तो होता है परन्तु चूँकि उसे बाजार में अपूर्ण स्थानापन्न वस्तुओं के साथ प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है अतः ऐसी अवस्था को एकाधिकृत प्रतियोगिता की स्थिति कहते हैं। चूँकि पूर्ण प्रतियोगिता तथा पूर्ण एकाधिकार दोनों ही बाजार की काल्पनिक दशाएँ हैं, अतः वास्तविक जीवन में अपूर्ण प्रतियोगिता एवं मध्यम बाजार की अवस्थाओं का जिक्र विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने किया है अर्थात् अपूर्ण प्रतियोगिता बाजार की वह स्थिति है जो पूर्ण प्रतियोगिता एवं एकाधिकार दोनों की चरम स्थितियों के मध्य होती है। इसी स्थिति को प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो० चैम्बरलिन ने एकाधिकृत प्रतियोगिता के रूप में रेखांकित किया है।

निष्कर्षस्वरूप, हम कह सकते हैं कि एकाधिकृत प्रतियोगिता बाजार की वह स्थिति है जिसमें अनेक किन्तु छोटे आकार की प्रतियोगी फर्में होती हैं और ये सभी फर्में मिलती-जुलती वस्तुएँ बेचती हैं परन्तु वे वस्तुएँ पूरी तरह से समरूप नहीं होतीं, अपितु वस्तुओं में थोड़ी-बहुत भिन्नता अवश्य पायी जाती है।

एकाधिकृत प्रतियोगिता की विशेषताएँ :-

एकाधिकृत प्रतियोगिता की विशेषताओं को निम्नांकित रूप में व्यक्त कर सकते हैं :-

(1) विक्रेताओं की अधिक संख्या :- एकाधिकृत प्रतियोगिता में विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है, परन्तु प्रत्येक विक्रेता बहुत छोटा होता है तथा वह कुल उत्पत्ति का बहुत छोटा भाग उत्पादित करता है। इन विभिन्न विक्रेताओं के बीच प्रतियोगिता होती है, वे स्वतंत्र रूप से कार्य करते

है और इनमें कोई समझौता एवं गुप्त संधि नहीं होती।

(ii) वस्तु-विभेद या वस्तु-भिन्नता :
वस्तु-विभेद एकाधिकृत प्रतियोगिता का मूल आधार है। वस्तु-विभेद से तात्पर्य है कि वस्तु-विभेद की सभी इकाइयाँ एक सी नहीं होती है।

(iii) फर्मों का स्वतंत्र प्रवेश :— एकाधिकृत प्रतियोगिता में उद्योग में किसी फर्म को प्रवेश की पूर्ण स्वतंत्रता रहती है परन्तु पूर्ण प्रतियोगिता की तुलना में इनका प्रवेश कुछ कठिन होता है क्योंकि बाजार की इस अवस्था में वस्तु-विभेद की स्थिति विद्यमान रहती है।

(iv) विक्रय लागतें :—
बाजार की इस अवस्था में विक्रय लागतों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है। प्रत्येक फर्म अन्य फर्मों की तुलना में अपने उत्पादन को अधिक मात्रा में बेचने की दृष्टि से विज्ञापन एवं प्रचार पर खर्च करती है। इसी प्रकार इन फर्मों में गैर-कीमत प्रतियोगिता पायी जाती है।

(v) प्रत्येक फर्म अपनी वस्तु के लिए एकाधिकारी :
बाजार की इस अवस्था में प्रत्येक फर्म का अपनी वस्तु पर एकाधिकार होता है। अर्थात् इस नाम की वस्तु अन्य कोई फर्म नहीं बना सकती।

(vi) समूह पर विचार :
एकाधिकृत प्रतियोगिता की स्थिति में उद्योग का धारणा नहीं होता है बल्कि समूह का धारणा होता है। एकाधिकृत प्रतियोगिता अपूर्ण प्रतियोगिता का न्यूनतम अपूर्ण रूप है।

Scanned with CamScanner

एकाधिकृत प्रतियोगिता में फर्म का संतुलन :-

(I) अल्पकाल में फर्म का संतुलन :-

अल्पकाल में निकट स्थानापन्न वस्तुओं के उत्पादन करनेवाले उत्पादकों में प्रतियोगिता अधिक ज्यादा होती है और उत्पादक माँग के अनुसार अपनी पूर्ति को समायोजित नहीं कर पाते हैं। अतः अल्पकाल में उत्पादक को अधिक मात्रा में लाभ या हानि की संभावना रहती है।

यदि फर्म की वस्तु की माँग मजबूत होती है और इसका कोई निकट स्थानापन्न नहीं होता है तो फर्म अपनी वस्तु की कीमत ऊँचा निर्धारित करने के स्थिति में होगी तथा इसलिए यह असामान्य लाभ पैदा करेगी। दूसरी तरफ फर्म के वस्तु की माँग अगर कमजोर होती है तो फर्म शून्य लाभ अथवा सामान्य लाभ प्राप्त करेगी। इसके अतिरिक्त यदि फर्म के वस्तु की माँग अत्यधिक कमजोर होती है तो वह हानि उठाएगी क्योंकि अल्पकाल में यह संभव हो सकता है कि फर्म अपने उत्पादन का समायोजन माँग के अनुसार न कर सके। अर्थात अल्पकाल में फर्म एकाधिकृत प्रतियोगिता की स्थिति में निम्नांकित तीन परिस्थितियों का सामना कर सकता है :-

(a) असामान्य लाभ।
(b) सामान्य लाभ।
(c) हानि।

(II) दीर्घकाल में फर्म का संतुलन या समूह संतुलन :-

दीर्घकाल में फर्म के संतुलन को निम्नांकित रूप से व्यक्त किया जा सकता है :-

(a) असामान्य लाभ नहीं :- दीर्घकाल में समय इतना अधिक होता है कि फर्म माँग में होनेवाले परिवर्तनों

Scanned with CamScanner

के अनुसार अपने पूर्ति को समायोजित कर सकती है फर्म अपने आकार में परिवर्तन कर सकती है, स्थिर साधनों में परिवर्तन किया जा सकता है तथा नई फर्मों की स्थापना की जा सकती है। अतः दीर्घकाल में किसी भी फर्म को असामान्य लाभ प्राप्त नहीं हो सकता।

(4) दीर्घकाल में किसी भी फर्म को हानि नहीं हो सकती :—
अल्पकाल में तो फर्म हानि उठाकर वहन कर लेती है क्योंकि उसे यह आशा रहती है कि वह इस हानि को भविष्य में पूरा कर लेगी। परन्तु दीर्घकाल में फर्मों को हानि होगी तो उत्पादन को बन्द करके उद्योग से बाहर चली जाएगी जिससे उत्पादन का स्तर और उस वस्तु की पूर्ति कम हो जाएगी। पूर्ति कम होने से वस्तु की कीमतें बढ़ेंगी तथा फर्मों को पुनः सामान्य लाभ प्राप्त होने लगेगी। अतः दीर्घकाल में फर्म को केवल सामान्य लाभ प्राप्त होगी।

(5) संतुलन शर्तें :—
पूर्ण प्रतियोगिता में दीर्घकाल संतुलन की निम्नांकित शर्तें हैं :—

(i) सीमान्त लागत सीमान्त आय के बराबर हो।
(ii) सीमान्त लागत वक्र सीमान्त आय वक्र को नीचे से काटे।
(iii) दीर्घकाल में फर्म को केवल सामान्य लाभ प्राप्त होगा अर्थात् औसत कीमत औसत लागत के बराबर होगी।

Scanned with CamScanner